दर्शन द्वारा अधिगम Learning from Philosophy) :- दर्शन सफल अधिगम का एक प्रमुख आधार माना जाता है। इस सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि "सभी संगठित मानवीय क्रिया-शीलताओं का एक विशेष लक्षण तथा अंग होता है और अच्छी तरह विचार की गयी पूर्व योजना की एक सुनिश्चित पृष्ठभूमि होती है। अधिगम प्रक्रिया इसका अपवाद नहीं है। ऐसा पूर्व विचार शिक्षा का दार्शनिक पक्ष (आधार) बनता है। दर्शन मानव चिन्तन की का ही दूसरा नाम है। जब अधिगम की प्रक्रिया एवं कार्य सुनियोजित तथा सुविचारित ढंग

Scanned with CamScanner

से होता है तभी उससे लाभ होता है। ऐसी दशा मे यह आवश्यक है कि अधिगम का आधार दर्शन अथवा चिन्तन हो। अधिगम एक सप्रयोजन प्रक्रिया एवं प्रभाव होता है और शिक्षा देने वाले इसके प्रति सचेत रहते है। इस प्रकार की सप्रयोजनता और सचेतनता के कारण ही दार्शनिक आधार का महत्व माना गया है। अधिगम की परिभाषा, अधिगम की विधियाँ, अधिगम को प्रदान करने वाले तथा स्थल शिक्षा की देखभाल करने वाले तथा राज्य का दृष्टिकोण आदि ऐसी विभिन्न चीजे है जिनका सम्बन्ध दर्शन से अवश्य होता है। अधिगम यदि प्रक्रिया है तो उसमे अन्तर्निहित वह अंश जो प्रक्रिया को बल देता है और सुनिश्चित दिशा मे आगे बढ़ाता है, उसका कारण दर्शन है।

मनोविज्ञान द्वारा अधिगम (Learning from Psychology) :— मनोवैज्ञानिक आधार में सीखने वाले मानव की जैविक विशेषताओ का अध्ययन करते है। अतः इनके अन्तर्गत शारीरिक बौद्धिक तथा सांवेगिक क्रियाओ, विकास तथा इनका प्रभाव व्यवहार पर क्या होता है, का अध्ययन करते है। जैविक आधार के रूप में व्यक्ति, उसकी प्रकृति, रचना, वृद्धि एवं विकास का अध्ययन करना जरुरी होता है। मानव एक विकासशील प्राणी है। ऐसी दशा मे विकास की विभिन्न अवस्थाए होगी, प्रत्येक अवस्था की अपनी विशेषताए होगी जिनका सम्बन्ध उसके ज्ञान अनुभव तथा इसकी प्राप्ति के लिए किए गये प्रयत्न एवं व्यवहारो से होता है। मनोविज्ञान के क्षेत्र मे दर्शन की ही भाँति विभिन्न सिद्धान्तो एवं सम्प्रदायो

Scanned with CamScanner

का जो विकास हुआ है, उसका प्रभाव शिक्षा पर हुआ है। मनोविज्ञान का अध्ययन क्षेत्र आज के युग में व्यक्तिगत ही न होकर सामूहिक भी हो गया है। इसके कारण समूह या सामाजिक विज्ञान का विकास हुआ है। अधिगम भी आज केवल व्यक्तिगत प्रयत्न न होकर सामाजिक एवं प्रक्रिया के रूप में समझी जा रही है, ऐसी दशा में समूह व्यवहार क्रिया-प्रतिक्रिया का सामाजिक एवं प्राकृतिक वातावरण के साथ अध्ययन होना अनिवार्य है। ये सब इस बात पर जोर देते हैं कि अधिगम का मनोवैज्ञानिक आधार है। मनोवैज्ञानिक आधार को समझने के लिए शिक्षा मनोविज्ञान के अन्तर्गत क्या अध्ययन किया जाता है, यह भी जानना जरूरी है। शिक्षा मनोविज्ञान में शिक्षार्थी की आनुवंशिकता, पर्यावरण, उसकी वृद्धि व विकास, व्यक्तिगत एवं सामूहिक व्यवहार, व्यवहार के विभिन्न रूप तथा विकास की दशा में उत्पन्न समस्याओं का समाधान तथा समाधान के साधन उन सबके लिए वैज्ञानिक ढंग से खोज तथा उनको प्रकट करने के लिए सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग आदि बातों का अध्ययन होता है। जिससे शिक्षा की प्रक्रिया व्यक्ति की आनुवांशिक क्षमताओं के अनुकूल सफलतापूर्वक होती है,

समाजशास्त्र द्वारा अधिगम (Learning from Sociology) :—

कुछ समय पूर्व शिक्षा का मनोवैज्ञानिक आधार को अधिगम का एकमात्र आधार कहा जाता रहा लेकिन समाज की प्रगति

Scanned with CamScanner

तथा शिक्षा को सामाजिक प्रक्रिया मानने के कारण सामाजिक अथवा समाजशास्त्रीय आधार को अन्य की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ कहा जाने लगा है। इसका तात्पर्य यह है कि शिक्षा की विषयवस्तु एवं शिक्षा की प्रक्रिया को सामाजिक तत्वों एवं सम्बन्धों के सन्दर्भ में निश्चित करना चाहिए तथा ऐसा करना चाहिए। समाज की संरचना व्यक्तियों के द्वारा होती है। समाज के विभिन्न समूह व्यक्ति बनाते हैं। इस प्रकार के समूह निर्माण में जिस किसी प्रकार की शिक्षा दी जाती है वह समूह के द्वारा निश्चित होती है। समाज एवं समूह की अपनी मांग के अनुसार तथा उसे पूरा करने के लिए शिक्षा की प्रक्रिया भी उसी ढंग की होती है। यही सब तथ्य शिक्षा के सामाजिक आधार बनाते हैं। इसके अनुसार शिक्षाशास्त्र के अन्तर्गत सामाजिक समाजशास्त्र का अध्ययन करते हैं।

सामाजिक आधार के अनुसार शिक्षा को एक सामाजिक प्रक्रिया घोषित करते हैं अर्थात शिक्षा तथा समाज के समूह में घनिष्ठ मेल होता है। शिक्षा की प्रक्रिया में समाज की संस्थाएं समाज की संस्कृति समाज एवं समूह जीवन के संचित अनुभव की क्रियाशीलताएं आदि सभी अपना योगदान करते हैं जिसके फलस्वरूप शिक्षा के आदर्श एवं लक्ष्य मूल उद्देश्य, साधन, पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम, शिक्षा देने एवं ग्रहण करने वाले सभी प्रभावित होते हैं।

Scanned with CamScanner

भाषा द्वारा अधिगम (Learning by Language) ऐसा माना जाता है कि प्रत्येक प्राणी की अपनी भाषा होती है लेकिन अन्य सभी प्राणी मनुष्य की भाँति सम्प्रेषण करने मे समर्थ नही होते है। मानवीय भाषा की कुछ निश्चित विशेषताए होती है जो उसकी सम्प्रेषणीयता को निश्चित अर्थ प्रदान करती है। भाषा की सक्षमता से हम भूतकाल वर्तमान तथा भविष्यत काल के विषय में बातचीत कर सकते है। मानव के अस्तित्व के केन्द्र बिन्दु के रूप में भाषा का विकास और उसके वाचिक और अवाचिक दोनो रूपो का प्रयोग सर्वत्र दिखाई देता है। भाषा का कार्य संचित ज्ञान और सम्प्रत्यय के मूल्यो को ग्रहण करना तथा उनमे परिवर्तन करना होता है। भाषा सम्प्रेषणीयता, चिन्तन तथा अनुभवो के पुनर्गठन का कार्य करती है।

भाषा विकास की विशेषताए –

(1) <u>अर्थवत्ता</u> - भाषा का वह गुण जिसमे शब्दो का प्रयोग वस्तुओ, घटनाओ अथवा विचारो के प्रतीक के रूप मे किया जाता है।

(2) <u>वाक्य विन्यास</u> – सार्थक वाक्य बनाने के लिए शब्दो को उपयुक्त स्थान पर रखने के भाषा के नियम

(3) <u>उत्पादकता</u> – मूल वाक्यो के लिए शब्दो को जोड़कर मूल वाक्य बनाने की क्षमता

Scanned with CamScanner

(4) विस्थापन — भाषा का वह गुण जिससे व्यक्ति वस्तुओं और घटनाओं से सम्बन्धित सूचना को दूसरे स्थान और समय पर सम्प्रेषित करता है। वह विस्थापन कहलाता है। भाषा के द्वारा ही यह सम्भव होता है कि जटिल ज्ञान के विशाल भण्डार को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक सक्षमता से सम्प्रेषित किया जा सके तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित किया जा सके।

अधिगम की सामाजिक सांस्कृतिक प्रक्रिया (Socio-cultural Process of Learning) — शिक्षा समाज में रहने वाले व्यक्तियों के सम्पूर्ण जीवन एवं व्यवहारों से सम्बन्धित ज्ञान और अनुभव प्राप्त करने की प्रक्रिया है। वास्तव में यह प्रक्रिया केवल वर्तमान से ही सम्बन्धित नहीं होती बल्कि इसका सम्बन्ध भविष्य से भी है। यही कारण है कि शिक्षा सामाजिक निधि को सुरक्षित रखने का एक साधन है, जिसके बल एवं आधार पर प्रत्येक पीढ़ी अपना सुधार एवं सम्वर्द्धन करती रहती है और अन्त में उन्नति के पथ पर अग्रसर होती है।

शिक्षा आधुनिक समय में विकास की प्रक्रिया से तात्पर्य रखती है; अतः विकास और शिक्षा दोनों को एक ही माना जाता है। विकास व्यक्ति तथा समाज दोनों का होता है क्योंकि बिना व्यक्ति के समाज की कल्पना करना असम्भव है और बिना समाज के व्यक्ति को वातावरण ही नहीं मिलता

Scanned with CamScanner

जिसमे वह अपना विकास करे।

अधिगम का सामाजिक कार्य उसकी सामाजिक संस्थाओं के द्वारा पूरा होता है। शिक्षा के द्वारा सामाजिक भावना की जागृति होती है। व्यक्ति समाज के कृत्यों मे भाग लेता है और सफलता के साथ उन्हे पूरा करता है। इसके मूल मे मनुष्य की सामाजिक भावना छिपी रहती है जो सामाजिक जीवन के लिए प्रेरणा एवं इच्छा से पूरी होती है। यही कारण है कि मनुष्य विभिन्न आर्थिक, राजनैतिक संस्थाए, विद्यालय, शिल्प संस्थाए आदि बनाता है।

अधिगम का एक महत्वपूर्ण कार्य सांस्कृतिक निधि की सुरक्षा एवं उसका पीढी दर पीढी हस्तान्तरण है। मैथ्यु आर्नाल्ड के अनुसार, समाज के व्यक्तियो के द्वारा जो कुछ श्रेष्ठतम रूप से सोचा या जाना गया है संस्कृति है। इस विचार से संस्कृति के अन्तर्गत हमारे सभी उत्कृष्ट, बौद्धिक, भावात्मक एवं शारीरिक कार्य सम्मिलित किये जाते है। ज्ञान विज्ञान, कला और साहित्य व्यवहार और कौशल से संस्कृति को प्रकट करते है। "संस्कृति किसी समाज के जीवन की सम्पूर्ण रीति है।

Scanned with CamScanner